ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 12, Iss 03, 2023

नाट्यान्वेषण : रंगमंच के विविध आयाम

ज्योत्सना आर्य सोनी
असिस्टेंट प्रोफेसर
शोधार्थी एसकेडी यूनिवर्सिटी हनुमानगढ़
कार्यरत एस आर एन आदर्श कॉलेज, चामराजपेट बेंगलुरु
8147464101
Jyotsananu39@gmail.com

भारत की पहचान आदिकाल से एक ज्ञान संस्कृति के रूप में जानी जाती रही है। विश्व की सभी सभ्यताएं ज्ञान के क्षेत्र में भारत की सदैव ऋणी रही है।नाटकों के संबंध में उपलब्ध शास्त्रीय जानकारी को नाट्य शास्त्र के नाम से जाना जाता है। इस संबंध में सबसे प्राचीन ग्रंथ का नाम नाट्य शास्त्र है। जिसे भरत मुनि ने लिखा नाटक अभिनय संगीत की दृष्टि से यदि नाट्य शास्त्र पर विचार किया जाए तो नाट्य शास्त्र की आज भी प्रासंगिकता है इसमें केवल नाट्य रचना के नियमों का ही आकलन ही नहीं बल्कि अभिनेता रंगमंच और प्रेषक इन तत्वों की पूर्ति के साधनों का विवेचन होता है। इसके 36 अध्यायों में भरत मुनि ने रंगमंच, अभिनेता, अभिनय, नृत्य, गीत, वाद्य, दर्शक, दस रूपक (नाट्यशास्त्र में भारतीय परंपरा में दस रूपों का विधान है) जिसे दस रूपक कहते हैं। और रस निष्पत्ति संबंधी सभी तथ्यों का विवेचन किया गया है।समग्र रूप से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है। "नाटक की सफलता केवल लेखन की प्रतिभा पर ही नहीं आधारित होती बल्कि विभिन्न कलाओं और कलाकारों के सम्यक के सहयोग से होती है।"1

नाट्य शास्त्र को पंचम वेद की संज्ञा से अभिभूत किया गया है। इसमें चार वेदों के तत्व समाहित है जैसे ऋग्वेद से नृत्य, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से उत्साह लिया गया है। नाटक शास्त्र के अनुसार इस मनोवैज्ञानिक स्थिति (भाव), ऐतिहासिक प्रतिनिधित्व (अभिनय), अभ्यास (धर्मो),शैली (वृतती),स्थानिक उपयोग (प्रवृत्ति), सफलता (सिद्धि), स्वर वाद्य यंत्र (अधोत्य),गीत (गानम) और मंच रंगमंच नाट्य शास्त्र के प्रमुख घटक है। इस ग्रंथ में प्रत्यभिज्ञा दर्शन की छाप है। प्रत्याभिज्ञा दर्शन में स्वीकृत 36 मूल तत्वों के प्रतीक स्वरूप नाट्य शास्त्र के 36 अध्याय है। प्रस्तुत शोध पत्र में हम रंगमंच और उसके के विविध आयाम को समझने का प्रयास करेंगे।

शब्द : रंगमंच, नाट्यान्वेषण, उत्तर आधुनिकता, वाक्, थिएटर, थिएटरटिकैलटी, रंगमंचीयता, रंगकर्म, रंगशालाएं,

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 12, Iss 03, 2023

रंगमंच (थिएटर) वह स्थान है।जहां नाटक खेल जाता है यह शब्द रंग और मंच दो शब्दों के मेल से बना है रंग का अभिप्राय प्रस्तुत दृश्य को अधिक आकर्षक बनाने हेतु दीवारों छात्रों और पदों पर विविध प्रकार के चित्रकार की जाती है।पात्र की वेशभूषा तथा सज्जा में भी विभिन्न रंगों का प्रयोग किया जाता है। दर्शक के बैठने के स्थान को प्रेक्षागार तथा रंगमंच के सहित समूचे भवन को प्रेक्षा गृह रंगशाला या नाट्यशाला विभिन्न नाम से जाना जाता है। पश्चिमी देशों में इसे थिएटर या ओपेरा नाम दिया गया नाट्य कला की उत्पत्ति भारत में मानी जाती है। ऋग्वेद के सूत्रों में यम तथा यामी, पुनरूरवा और उर्वशी आदि के कुछ संवाद उपस्थित है। ऐसा अनुमान है इन्हीं संवादों की प्रेरणा पाकर लोगों में नाटक की रचना या नाटक कला की ओर उन्मुख होने की प्रवृत्ति शायद आई होगी। भरत मुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में नाटकों के विकास प्रक्रिया को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है-‘ नाटक कला की उत्पत्ति देवी है अर्थात दुख रहित सतयुग बीत जाने पर त्रेता युग के आरंभ में देवताओं ने श्रेष्ठ ब्रह्मा से मनोरंजन का ऐसा साधन उत्पन्न करने की प्रार्थना की जिस देवता लोग अपना दुख भूल सके और आनंद प्राप्त कर सके। फलत: उन्होंने ऋग्वेद से कठोपकथन,सामवेद से गायन, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर नाटक का निर्माण किया। विश्वकर्मा ने रंगमंच बनाया आदि।‘2

नाटक का विकास चाहे जिस प्रकार भी हुआ हो संस्कृत साहित्य नाट्य ग्रंथ और ततसंबंधी अनेक *शास्त्रीय* ग्रंथ लिखे गए और साहित्य में नाटक लिखने की परिपाटी संस्कृत से हिंदी को विरासत के रूप में प्राप्त हुई। संस्कृत के नाटक उत्कृष्ट कोटि के होने के साथ-साथ अभिनय के उद्देश्य से लिखे जाते और वह अभिनीत होते थे। नाट्य कला प्राचीन भारत के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। इसके प्रमाण संस्कृत व पालि ग्रन्थो में उपलब्ध होते हैं। कौटिल्य के ‘अर्थशास्त्र’ में नाट्य गृह का वर्णन मिलता है। इसके साथ अग्नि पुराण, शिल्प रत्न ,काव्य मीमांसा तथा संगीत मार्तंड में भी राज प्रसाद के नाट्य मंडपों का विवरण उपलब्ध होता है। महाभारत में भी रंगशाला का उल्लेख प्राप्त होता है साथ ही हरिवंश पुराण तथा रामायण में भी नाटक खेले जाने का वर्णन कहीं-कहीं मिलता है।भारत में जब रंगमंच की बात की जाती है तब ऐसा माना जाता है, कि छत्तीसगढ़ी रामगढ़ के पहाड़ी पर महाकवि कालिदास द्वारा निर्मित प्राचीनतम रंगशाला मौजूद है। जहां उन्होंने महाकाव्य में ‘मेघदूतम’की रचना की इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि मध्य प्रदेश के अंबिकापुर जिले के रामगढ़ पहाड़ पर स्थित कालिदास द्वारा निर्मित नाट्यशाला भारत की पहली नाट्यशाला है जो ‘सीतवंगा’ गुफा के नाम से परिचित है। पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार धार्मिक कृतियों से ही नाटकों का प्रादुर्भाव हुआ होगा। रंगस्थली का प्रारंभिक स्वरूप वृताकार रहा होगा इसके पश्चात दर्शनीयता पर ध्यान केंद्रित होने के कारण कटोरी नुमा के स्थान रंगस्थली के लिए

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 12, Iss 03, 2023

उपयुक्त समझा जाने लगा। धार्मिक कृत्यों से ही नाटकों का प्रादुर्भाव हुआ होगा। रंगस्थली का प्रारंभिक स्वरूप वृताकार रहा होगा इसके पश्चात दर्शनीयता पर ध्यान केंद्रित होने के कारण कटोरी नुमा स्थान रंगस्थली के लिए उपयुक्त समझा जाने लगा होगा। धार्मिक कृत्यों और नृत्यों के लिए यह उत्तम प्रबंध था। नाटक की विकास यात्रा के दौरान कथागारो व अभिनेताओ के सामने की ओर बैठने वाले को देखने सुनने के लिए पर्वतीय घाटी उपयुक्त प्रतीत होने लगी। जिसके पीछे फैला हुआ प्राकृतिक दृश्य और आकर्षक प्रतीत हुआ। धीरे-धीरे कृत्रिम रंग शालाओं का निर्माण होने लगा जिसमें दर्शकों के बैठने वृताकार सीढ़ी नुमा स्थान होता था तथा उपयुक्त सज्जा का भी प्रबंध किया गया। कालांतर में प्रेक्षा स्थान तीन की बजाय केवल एक ओर सामने ही रह गया। सारा विन्यास गोल से बदलकर चौकोर हो गया और नाट्यशाला का आधा या इससे भी अधिक स्थान घेरने लगा।

नायक रंगमंचीय व साहित्यिक दोनों विधा है। इसलिए किसी नाट्य कृति के साथ उसके रंगमंचीय संदर्भ, सीमाएं, संभावनाओं का अध्ययन किया जाना ही नाटक की समीक्षा का पूर्ण करता है। विडंबना की बात यह है कि समीक्षाएं या तो आलेखन पर केंद्रित रहती है या प्रस्तुति पर। दोनों के समन्वित रूप को लेकर मनन विरला ही रहा है।

रंगरंग अनुशामनों के गंभीर अध्येता डॉ बृजरतन जोशी की प्रकाशित कृति 'नाट्यान्वेषण' इस दिशा में एक आशा की किरण जागती है। रंग प्रसंग के ,सवधि दिशा विश्लेषण रखने के साथ यह कृति उसकी सीमाओं सम्भावनाओं को तलाशती जवाहर कला केंद्र जयपुर से प्रकाशित हुई है। अपनी संस्कृति के प्रति डॉ जोशी इस पुस्तक के माध्यम से मानव हृदय में सहृदयता के जागरण, स्फुरण एवं विस्तार सर्वाधिक उपयुक्त विधा नाटक के पक्ष में तर्क रखते हुए नाटक व रंगमंच को लेकर कई जिज्ञासा हमारे समक्ष रखते हैं। जिसमें प्रश्न भी उनके हैं और समाधान के रूप में उत्तर भी उनके । अन्वेषी प्रवृत्ति के डॉ जोशी ने भारतीय शास्त्रीय परंपरा तथा प्रज्ञा लोक शैलियां का जो स्वरूप हमारे समय रखा है इससे उनकी रंगमंच के प्रति गहरी लगाव रखने वाली दृष्टि नजर आती है। डॉ जोशी ने भारतीय रंगमंच व नाटक के जीवन्त प्रश्नों को लेकर सुचिंतित विमर्श प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक की भूमिका औपचारिक ना होकर राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा वैचारिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई है जिसमें –"उत्तर आधुनिकता की दुरनिवार प्रवृत्तियों और उनसे उपजी चुनौतियां विसंगतियों और विमर्शों से भारतीय रंग परंपरा की ओर से उत्तर देने वाली कहा गया है"।3

साथ ही इस पुस्तक में उत्तर आधुनिक चिंतन को गहरी समकालीन समझ के साथ डॉ जोशी ने रंगमंचीय संदर्भ में जांचा है। साथ ही रंगमंच व उत्तर आधुनिकता के बीच संबंध खोजते हुए इस पुस्तक में नजर

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 12, Iss 03, 2023

आते हैं जिसके केंद्र में भाषा को रखा गया है। भरत मुनि के अनुसार “वाची वस्तु कर्तव्यो नाट्येस्मृति यानी वाक् सारे नाट्योदम का मूल आधार है।भरतमुनि कहते हैं कि रंगमंच को चाहिए कि वह वाक् या शब्द को लेकर सदा सचेत बना रहे इस पुस्तक के दो अध्यायों में संस्कृत नाटकों को उत्तर आधुनिकता के संदर्भ में देखने का प्रयास किया गया है हालांकि हिंदी के कई आलोचक ने उत्तर आधुनिकता के भाषा विमर्श और संस्कृत वैयाकरण कारों की मान्यता को काफी साम्य पाया है। परंतु संस्कृत नाटकों के संदर्भ में कोई विरला ही दिखाई देता है। डॉ जोशी के शब्दों में “स्थानीय सैद्धांतिकी की कोई अहम भूमिका हो सकती है लेकिन वह आरतो द्वारा नाटक को भाषा का आक्रांत उपनिवेश घोषित करने से सहमत नहीं है दरिदा का यह कहना ठीक है कि पाठ का कोई अंतिम नहीं हर पाठ अनंतिम है”।4

इसके साथ ही उन्होंने उसमें उत्तर आधुनिकता के प्रभावों से हमारी रंग परंपरा का विकास होगा या सीमांकन, पर भी चिंता व्यक्त की है। इस प्रश्न के उत्तर में जोशी कहते हैं –“इस रचनात्मक संकट का समाधान पूर्णतया रचनात्मक तरीके से अपनी परंपरा के माध्यम से किए जाने, ऐसा नहीं कि हमारा नाट्य शास्त्र पश्चिम की इस रंग आंधी के अंधकार को अपने आलोक से छिन्न-भिन्न नहीं कर सकता”4 डॉ जोशी ने इस बात पर जोर दिया है की ‘नई रंग व्यवस्था रंग कर्म को पहले मूल नाटक फिर उसके नाट्य लेख से मुक्त करने की चेष्टा में है। समकालीन रंग व्यवस्था यांत्रिकी होती जा रही है जो भाषा मुक्त होने के आग्रह को लेकर चल रही है। उत्तर के प्रतिरूप में जोशी संस्कृत रंगमंच को सामने रखते हुए यंत्र की पूर्ति अभिनय के माध्यम से करते हैं जहां भाषा ही अभिनय का पर्याय बनाकर हमारे समक्ष आती है।‘ “उत्तर आधुनिकता के कई विचारों का समायोजन है जिनमें कुछ परंपरा विरोधी है एक मान्यता है कि आज ज्ञान सत्ता संवर्धन का साधन है ना कि सत्य को तलाश करने का। उत्तर आधुनिकता एक स्वतंत्र बौद्धिक अभिवृत्ति है, जिसका सूत्रीकरण संभव नहीं है।रंगमंच के संदर्भ में इसमें तकनीकी और प्रयोग की संभावनाओं पर अधिक बल देते हैं”5

इस पुस्तक में नाट्यशास्त्र के माध्यम से भारतीय रंगमंच की पहचान और जड़ों को खोजने का प्रयास किया गया है। क्योंकि नाट्यशास्त्र केवल एक पुस्तक नहीं वह संपूर्ण भारतीय रंगमंच का प्रतीक है। इस पुस्तक में रंगमंचीयता को नाटक की आलेख में प्राण प्रतिष्ठा से जोड़ने का प्रयास किया गया है। रंगमंच के सृजनात्मक आयाम और बहुरंगी भाव भूमियों के संदर्भ में डॉ जोशी ने इस को ‘स्टेज’ की बजाय ‘थिएटर’ कहना ज्यादा उचित लगा है साथ ही उन्होंने ‘रंगमंचीयता’ और ‘थिएरटीकैलटी’ को एक बराबर रखा है। हिंदी नाटक परंपरा और प्रमुख रचनाकार शीर्षक से इस पुस्तक में रंग इतिहास में पनपी पांच प्रमुख परंपराओं और प्रतिनिधि नाटक कारों का दिग्दर्शन कराया गया है। सूक्ष्म से सूक्ष्म रचनाकारों के अवदान

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 12, Iss 03, 2023

को चिन्हित करते हुए उन्होंने अपनी आलोचकीय प्रज्ञा का परिचय दिया है। अपनी पुस्तक के माध्यम से अपनी संस्कृति परंपराओं से छूटती पीढ़ी का आत्मबोध करने का सामर्थ्य इसकी गढ़न में निहित है। जोशी की लोक संस्कृति के प्रति गहरी सोच समझ में पकड़ है। ब्रजरतन जोशी के शब्दों में "दुनिया के किसी भी लोक साहित्य में महानायक जैसी कोई अवधारणा नहीं पाई गई है। हां नायक तो थे वह नायक था स्वयं लोक समूह। नाटक को महानायक शास्त्रीय परंपरा ने बनाया। "6 इस पुस्तक में वैसे तो आधुनिक हिंदी में अन्य भारतीय भाषाओं के प्रमुख नाटकों के संदर्भ आते हैं लेकिन राजस्थान से जुड़ी नाटक कारों को विशेष रूप से इसमें चिन्हित किया गया है। मणि मधुकर, नंदकिशोर आचार्य, राजानंद, भानु भारती, हमीदुल्लाह, मोहन महर्षि और रिजवान जहीर उस्मान शामिल है। आचार्य के नाट्य संसार पर चर्चा में वह ऐतिहासिक भाषा लोक संवेदना जैसे मसलों पर विचार रखते हैं। राजाराम भादू के शब्दों में" डॉ नरनारायण राय की पुस्तक नटरंग विवेक पर लिखते हुए हिंदी की आधुनिक नाट्य आलोचना पर टिप्पणी भी सरसरी निगाह डाली गई है। देवेंद्र राज अंकुर का पहला रंग पर विचार में इस क्रम में कुछ गाढ़ा होता गया है। कृष्ण बलदेव के प्रयोगात्मक नाटक पर एक स्वतंत्र लेख है नरेंद्र भानावत की पुस्तक भारतीय लोकनाट्य पर विशुद् चर्चा में लोकनाट्य रूपों को आधुनिक नाटकों के संदर्भ में देखा गया है अंत में नंदकिशोर आचार्य और भानू भारती के साक्षात्कार है जहां कई प्रश्न उत्तर खुलकर सामने आए हैं।"7 नंदकिशोर आचार्य जी कहते हैं "समाज की बहुत सी परिभाषा की जाती है उनमें से एक परिभाषा यह भी हो सकती है, बल्कि होनी चाहिए कि एक सी संप्रेषण संरचना में रहने वाला मानव समूह एक समूह समाज होता है उसे समाज के लोग एक दूसरे को समझ सकते हैं उन्होंने कुछ और उल्लेखनीय बातें कही है जैसे आपके मन में जो कुछ घटित होता वहीं घटना है दो व्यक्तियों के बीच जो अंतसंबंधों में घटित होता है वह भी घटना है और अंतर्द्वंद को हम अभिनय में दिखा सकते हैं। एक पात्र की मुद्राओं, भंगिमाओं, और व्यवहार में भी दिखा सकते हैं। अभिनय की ज्यादा संभावनाएं अंतर द्वंदों को व्यक्त करने में दिखती है। "8कुल मिलाकर यह पुस्तक समकालीन नाटक और बहु आयामी संसार की झलक दिखाने की साथ-साथ कई प्रश्नों को उठती है। 'पाठ से ध्वनि की ओर प्रत्यावर्तन क्या लोकनाट्य की आदिम परंपरा की ओर लौटना नहीं है' यह कृति नाटक लेखन के विविध आयामों पर प्रकाश डालती हुई उसके निर्देशन समीक्षक भाषा में रंग कर्म को हमारे सामने खूबी पेश करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 मालवीय डॉ सुधाकर (1995) हिंदी दशरूपक वाराणसी, भारत:कृष्ण अकादमी पृष्ठ संख्या 7

2 राय गोविंद चंद्र भरत नाट्यम शास्त्र में नाट्य शालाओं का रूप

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 12, Iss 03, 2023

3 कृष्ण बिहारी पाठक, पुस्तक समीक्षा,नाट्य आलोचना की सीमा और संभावना की खोज, रंग योग, अंक द्वितीय 2023-2024

4 डॉ ब्रजरतन जोशी, नाट्यान्वेषण

5. राजा रामभादू वेब दुनिया, भरतपुर, पुस्तक चर्चा

6. डॉ ब्रजरतन जोशी नाट्य अन्वेषण

7 राजा रामभादू , पुस्तक चर्चा, वेबदुनिया

8 डॉ ब्रजरतन जोशी ,नाट्यान्वेषण

9 नाट्यशास्त्र विकिपीडिया

10. भारतीय रंगमंच के क्षैतिज(वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय भारत सरकार)

11 रंगमंच, विकिपीडिया